ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

ऐतिहासिक–सामाजिक विकास में साहित्य का योगदान साहित्य के समाज शास्त्र के विशेष सन्दर्भ में

Contribution of Literature in Historical-Social Development with Special Reference to the Sociology of Literature

Paper Submission: 11/04/2021, Date of Acceptance: 20/04/2021, Date of Publication: 22/04/2021

अरूण कुमार उपाध्याय
प्राध्यापक,
समाज शास्त्र विभाग,
शासकीय एम0जे0एस0
महाविद्यालय, भिन्ड,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

साहित्य अपने व्यक्त या मूर्त रूप में रचना या कृति है किन्तु अव्यक्त रूप में रचना के पीछे रचनाकार का व्यक्तित्व और उसके व्यक्तित्व के पीछे उसका सामाजिक परिवेश रहता है। अतः साहित्य के पूर्ण अध्ययन के लिये उसके सामाजिक पहलुओं व सन्दर्भो का अध्ययन आवश्यक है, जो उसके अस्तीत्व व महत्ता को प्रभावित करते है। साहित्यकार की रचना का जिन रूपों मे विकास होता है तथा जिन दशाओं में साहित्य की वह रचना करता है, वह साहित्यकार का सामाजिक परिवेश है । जिन सामाजिक सन्दर्भो को आधार बना कर जिन विशेष सामाजिक परिस्थितियों में रचना का सृजन पूर्ण होता है, वह रचना का सामाजिक परिवेश है। स्वभवतः रचना व रचनाकार दोनो के सामाजिक परिवेश में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। किन्तु दोनो सदा सर्वदा एक नही होते। कभी कभी रचना की प्रक्रिया कुछ ऐसी परिस्थितियो से होकर गुजरती है जो कर्ता को सामान्य परिस्थितियों से भिन्न होती है। अतः साहित्य के समाज शास्त्र का लक्ष्य भी साहित्य एवं समाज के पारस्पिरिक सम्बन्धों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में समाज और साहित्य के बीच अन्तःसम्बन्धों को साहित्य के समाज शास्त्र के सन्दर्भ में ही करने का प्रयास किया गया है और यह जानने का प्रयास किया गया है कि समाज के विकास में साहित्य का क्या योगदान रहा है ?

Literature is a creation or work in its expressed or embodied form, but behind the creation in the latent form lies the personality of the creator and behind his personality his social environment. Therefore, for the complete study of literature, it is necessary to study its social aspects and context, which affect its existence and importance. The forms in which the writer's creation develops and the conditions in which he creates literature is the social environment of the writer. The social context under which the creation of the work is completed is the social environment of the creation. There is probably a close relationship between the social environment of both the creator and the creator. But the two are not always the same. Sometimes the process of creation passes through some circumstances which are different from the normal circumstances to the doer. Therefore, the goal of the sociology of literature is also to study the interrelationship between literature and society. In the present research paper, an attempt has been made to do the interrelationship between society and literature in the context of the sociology of literature and an attempt has been made to know that what has been the contribution of literature in the development of society?

मुख्य शब्द : साहित्य, लोकवाद, अतिव्यापक, सांस्कृतिक, प्रो. डी. पी. मुखर्जी।
Literature, Folkism, Extensive, Cultural, Prof. D.P. Mukherjee.

प्रस्तावना

साहित्य के समाज शास्त्र की परम्परा वस्तुतः यूरोप में 19 वी शताब्दी में आरम्भ हो गयी थी और वर्तमान युग की लोकवादी विचारधाराओं विशेषतः मार्क्स दर्शन के प्रभाव से भी निरन्तर उसका विकास होता रहा है, पर भारतीय परिप्रेच्छ में इनको विकसित करने का श्रेय प्रो. धुर्जटी प्रसाद मुखर्जी 1894–1962 को ही जाता है । प्रो धुर्जटी प्रसाद मुखर्जी बंगाल में साहित्य व संगीत की

विधाओं के प्रमुख लेखक और विचारक माने जाते है। उत्तर भारत व भारत के अन्य भागों में उन्हे समाज शास्त्री और अर्थ शास्त्री के रूप में जाना जाता है। वास्तव में वे अतिव्यापक दृष्टिकोण रखने वाले और पैनी अर्न्तदृष्टि से सम्पन्न एक अद्भूत विचारक थे । उनका चिन्तन एक विषय में सीमित न होकर ज्ञान के विभिन्न धाराओं के समन्वय व एकीकरण में निहित है। उन्होने समाज शास्त्र के सीमान्त विज्ञान की परिकल्पना की ओर अपना दृष्टिकोण बहुत ही विशाल एवं उदार रखा । उनके चिन्तन को उक्त पृष्ठभूमि में हम उनके साहित्य के समाज शास्त्र सम्बन्धी विचारों की प्रस्तुत लेख में चर्चा कर रहे है । इस चर्चा को निम्न भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. साहित्य के समाज शास्त्र की अवधारणा
2. साहित्य का समाज पर पडने वाला प्रभाव
3. साहित्य के समाज शास्त्र की विशेषतायें
4. साहित्य के समाज शास्त्र की सामान्य सामाजिक निष्ठाये

साहित्य का भी कोई समाज शास्त्र हो सकता है , यह बात भारतीय सन्दर्भ में प्रो. डी. पी. मुखर्जी से पहले किसी को भी मालुम नही था । आपने सबसे पहले साहित्य के समाज शास्त्र को विकसित किया । साहित्य का समाज शास्त्र , समाज शास्त्र की एक ऐसी शाखा है जो समाज के सन्दर्भ में साहित्य का अध्ययन करता है। इस रूप में हम कह सकते है कि साहित्य का समाज शास्त्र साहित्य का अध्ययन करते समय इस बात की विवेचना करता है कि एक समय विशेष की परिस्थितियां साहित्य को किस रूप में और कहां तक प्रभावित करती है। वह इस बात का भी अध्ययन करता है कि साहित्य का समाज पर क्या प्रभाव पडता है ।

अध्ययन का उद्देश्य

साहित्य के समाज शास्त्र का उद्देश्य समाज शास्त्र के सिद्धान्तों और सन्दर्भो के परिप्रेच्छ में साहित्य का अध्ययन करते है।

विषय विस्तार

प्रो. डी. पी. मुखर्जी ने साहित्य के जिस समाज शास्त्र को प्रस्तुत किया है, उसका आधारभूत मान्यता यह है कि साहित्य समाज का दर्पण है और वह इस अर्थ में यदि हमें किसी युग की एक समाज विशेष के बारे में ज्ञान प्राप्त करना है तो साहित्य का अध्ययन इस सम्बन्ध में सहायक सिद्ध हो सकता है। वास्तविकता तो यह है कि एक समय विशेष का साहित्य उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक अवस्थाओं का चित्रण करता है। इस रूप में हम कह सकते है कि समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिस्थितियां यह निर्धारित करती है कि साहित्य की अर्न्तवस्तु क्या होगी ।

उपरोक्त आधार पर प्रो. मुखर्जी ने भारतीय साहित्य के समाज शास्त्र को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी मान्यता यह है कि समय बदलने के साथ साथ सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियां बदलती गयी और उसी के अनुसार भारतीय साहित्य में परिवर्तन होता गया । प्राचीन समाज में साहित्य संस्कृत से सम्बन्धित था। उस समय संस्कृत ही प्रचलित भाषा थी और सामाजिक संगठन की एकता के आधार के रूप में क्रियाशील थी, परन्तु उसके बाद स्थिति धीरे धीरे परिवर्तित होती गयी और उसी के साथ साथ संस्कृत साहित्य का स्वरूप भी बदलता गया । इन परिवर्तनों के महत्वपूर्ण कारणों में मुस्लिम संस्कृति व पाश्चात्य संस्कृति विशेष रूप से उल्लेखन्नीय है। इन दोनो प्रकार के साहित्यों ने अपने अपने समय में भारतीय जनजीवन और भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया ।

प्रो. मुखर्जी के अनुसार भारतीय साहित्य में परिवर्तन तब हुआ जब मुसलमानों ने अपना सम्राज्य इस देश में स्थापित किया, पर उस समय अपने देश में परिवर्तन की गति बहुत तीब्र नही थी क्योंकि उस समय यातायात व संचार के साधन विकसित नही थे । इसके अतिरिक्त विभिन्न समुदायों के धर्मो व जाति प्रथा पर अधिक प्रतिवन्ध होने के कारण विभिन्न समुदायों में एक दुसरें से अन्तक्रिया बहुत कम होती थी । शासक वर्ग विशेषकर नगरो में निवास करता था जब कि आम जनता आत्मनिर्भर बाहरी दुनिया से बेखबर गांवों में रहती थी। पर इसका तात्पर्य यह नही है कि मुस्लिम साहित्य व संस्कृति का कोई प्रभाव भारतीय साहित्य पर नही पडा। वास्तविक स्थिति यह थी कि दोनो संस्कृतियों और साहित्यों मे परस्पर आदान–प्रदान की प्रक्रिया चलती रही जिसके फलस्वरूप दोनो की प्रकृति में उल्लेखन्नीय परिवर्तन हुए । जिसे आज हम हिन्दी भाषा कहते है या जो आज उर्दू भाषा कहलाती है वह वास्तव में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति व साहित्य के परस्पर लेन देन का ही परिणाम है। बहुत से ऐसे शायर भी हुए है जो संस्कृत भी जानते थे। हिन्दी कविता का जनक 'अमीर खुसरो' को माना जाता है जो कि स्वयं में वह एक तुर्क था । उसी प्रकार हिन्दी भाषा अरबी, फारसी के असंख्य शब्दों से आज भी सम्बद्ध है। दुसरी ओर फारसी भाषा का भारतीय रूप उर्दू ही है। दिल्ली में मिरजा गालिब और लखनउ में अनीश आदि ऐसे शायर हुए है जो हिन्दी भी खुब जानते थे । दुसरी ओर रामायण और महाभारत आदि जैसे ग्रन्थों का अनुवाद फारसी भाषा में हुआ है। इस सन्दर्भ में प्रो. मुकर्जी ने भक्ति आन्दोलन कालीन साहित्य का विशेष रूप से उल्लेख किया है। भक्ति आन्दोलन में सबसे प्रमुख सन्त कबीर हुए जिन्होने हिन्दी में पदो की रचना की । मलिक मोहम्मद जायसी मुसलमान होते हुए भी हिन्दी में पद्मावत ग्रन्थ की रचना की जो भक्तिकाल का प्रेम महाकाव्य के नाम से जाना जाता है। उधर पंजाबी भाषा की भी उन्नति हुई । इस प्रकार हिन्दू ग्रन्थ मुस्लिम साहित्यकारो ने ही नही बरन सन्तो ने भी हिन्दू मुस्लिम साहित्य को अपने अपने ढंग से प्रभावित करने का प्रयास किया । जयदेव ने गीत गोविन्द की रचना की और मीरा बाई ने राजस्थानी भाषा में मधुर भक्ति गीत लिखे । इस रूप में कहा जा सकता है कि जहां एक ओर मुस्लिम संस्कृति ने हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया वही दुसरी ओर अपना कर्तव्य पालन करते हुए मस्लिम साहित्य के विकास में भी अपना योगदान दिया।

मुस्लिम शासन के बाद हमारे देश में अंग्रजी शासन की स्थापना हुई । अंग्रेज भारत में अकेले नही आये बल्कि अपने साथ पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति भी ले आये । इसी के फलस्वरूप हमारा सम्पर्क अंग्रेजी

साहित्य से हुआ । शासन प्रबन्ध चलाने के लिये अंग्रेजी जानने वाले भारतीयो की आवश्यकता महसूस हुई । इसलिये अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार प्रसार किया गया । इस शिक्षा के माध्यम से हमारा सम्पर्क अंग्रजी संस्कृति व साहित्य से हुआ और वह निरन्तर बढता गया । इसी के साथ ही भारतीय साहित्य में उल्लेखन्नीय परिवर्तन हुए ।

राजा राम मोहन राय और पंडित युगल किशोर के प्रयासो से गद्य साहित्य का विकास हुआ । केवल गद्य के क्षेत्र में ही नही, बल्कि नाटक, उपन्यास और कविता के क्षेत्र में भी भारतीय साहित्य अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित हुआ । इसी पाश्चात्य विकास के कारण भारत के विभिन्न प्रदेशो में साहित्य नव विकास हुआ । भारतेन्दु जी ने हिन्दी साहित्य की जो नयी दिशा प्रदान की है उस पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बंगाली साहित्य के क्षेत्र में सबसे पहले ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और बाद में रवीन्द्र नाथ टैगोर, बंकिम चन्द्र चटर्जी, शरत चन्द्र चटर्जी आदि ने बंगला कहानी, कविता और उपन्यास के विकास में अपना अनुपम योगदान दिया है। बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित प्राक्ष्यात पुस्तक आनन्द मठ जिसको भारतीय राष्ट्रीयता की बाईबिल माना जाता हैं, वह अंग्रेजी साहित्य से ही प्रेरिता माना जाता है। भारतीय नाट्य साहित्य, निबन्ध साहित्य, आलोचना साहित्य में भी अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव स्पष्टतः दिखता है। जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी साहित्य में जिस छायावाद का शुभ आरम्भ किया वह अंग्रेजी साहित्य से ही पेरित था ।

दूसरी ओर अनेक अंग्रेजी साहित्यकारो ने अनेक संस्कृत ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया और संस्कृत साहित्य की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित किया । इस प्रकार सांस्कृतिक आदान प्रदान के फलस्वरूप भारतीय साहित्य अपने एक नये रूप में प्रगट हुआ ।

इस प्रकार भारतीय साहित्य पर पहले मुस्लिम संस्कृति और साहित्य का और बाद में पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति का प्रभाव पडा। जिसके फलस्वरूप नवीन भारतीय साहित्य का विकास हुआ । इस साहित्य की कुछ विशेषताओं को निम्न रूप में रख जा रहा है–

1. मूल रूप में भारतीय साहित्य को संस्कृत श्लोको के रूप में प्रस्तुत किया जाता था पर आधुनिक भारतीय साहित्य के क्षेत्र मे अनेक प्रकार के विस्तार देखने को मिलता है और ये विस्तार उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध यात्रा विवरण, वीरगाथा आदि है। इनके विकसित होने से भारतीय साहित्य का क्षेत्र अत्यकिधक बढ गया और इस काम में आधुनिक छापेखाने की सुविधा और अग्रेजी शिक्षा का विस्तार विशेष रूप से सहायक सिद्ध हुआ ।
2. मुलरूप से भारतीय साहित्य धर्मप्रधान हुआ करता था पर अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव स्वरूप इसमे नये आदर्श और मूल्य जुडते गये और ये थे– स्वतन्त्रता, समानता, विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति, राष्ट्रीयता और सामाजिक समस्यायें आदि। इन्ही आदर्शो और मूल्यों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, राष्ट्रीयता, , दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह से सम्बन्धित बहुत सी रचनाये धीरे धीरे प्रगट होने लगी । दूसरी ओर व्यक्तिवाद, रोमान्टिक प्रेम व स्त्रियों की स्थिति पर भी अपना स्थान बनाती गयी । स्त्रियों को दासी के रूप में कम और जीवन साथी के रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति दिखायी देने लगी । रूढिवादी लेखको ने भी स्त्रियो को मा, पत्नी या जीवन साथी के रूप में चित्रित करना आाम्भ कर दिया ।
3. इस सन्दर्भ में एक विशेषता सामने आयी कि भारतीय साहित्य के लेखको के रूप में भद्रजनो का एक नया वर्ग अपने आप विकसित हो गया । इस वर्ग की एक विशेषता यह थी कि सभी लोग अंग्रेजी में शिक्षित थे और साहित्य को एक पेंशे के रूप में स्वीकार करते थें ।
4. प्रो डी. पी. मुखर्जी के अनुसार आधुनिक भारतीय साहित्य पर उद्योगवाद और प्रौद्यौगिकी का भी प्रभाव पडा जो स्पष्टतः दिखता है। इस रूप में भारतीय साहित्य का ग्रमीण समाज पर उद्योगवाद का क्या प्रभाव पडा, इस समस्या की भी चर्चा होने लगी । साथ ही साथ प्रौद्यौगिकी के विकास के फलस्वरूप पनपे सभी वर्ग के विषय में लिख जाने लगा । पुजीवदी अर्थव्यवस्था के अर्न्तगत शोषण, गरीबी, और औद्यौगिक समस्याओं पर भी भारतीय साहित्यकारो ने विवेचना आरम्भ की और इन विषयों पर अनेक उपन्यास, नाटक, कहानी आदि लिखें गये । एक ऐसे ही साम्यवादी नाटक में लिखा गया कि सर्वहारा वर्ग जब अपना हिस्सा मांगेगा तो एक खेत नही, एक गांव नही बल्कि पुरा विश्व मांगेगा ।

प्रो. डी. पी. मुखर्जी ने उन सामान्य सामाजिक निष्ठाओं का भी चित्रण किया है जिनके द्वारा आधुनिक समय में भारतीय साहित्य अपने आप को सम्बद्ध करने का प्रयास कर रहा है ।

1. पाश्चात्य संस्कृति और शिक्षा के सम्पर्क में आाने से प्रगति में निष्ठा बढती गयी और यह विश्वास घटता गया कि वही होगा जो भाग्य में लिखा है। इसके स्थान पर विवेकानन्द का यह नारा बुलन्द होता गया कि उठो, जागो और इस निष्ठा के साथ आगे बढो कि तुम स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता हो ।
2. परम्परागत रूप से जाति व्यवस्था का अधिक महत्व था । जाति के बाद परिवार का महत्व माना जाता है । पर आधुनिक समय में व्यक्ति का महत्व दिन प्रतिदिन बढता गया । व्यक्ति किस परिवार का सदस्य है यह बात गौड हो गयी । प्राथमिक बात यह हुई कि स्वयं व्यक्ति क्या है ? भारतीय साहित्य में इसी व्यक्ति के प्रति निष्ठा उजागर होती गयी ।
3. परम्परा के रूप में भारतीय साहित्य धर्म प्रधान होने के कारण तर्क की कसौटी पर खरा नही उतरता था, पर धीरे धीरे इस प्रकार के साहित्यो का विकास हुआ जिसमे तर्क को अधिक महत्व दिया गया । अर्थात ऐसे बातो और विश्वासों को स्थान दिया गया जो तर्क की कसोटी पर खरा उतरे । वास्तव में आधुनिक समय में वैज्ञानिक अनुसन्धान की जो प्रवृत्ति होती है, उसके अन्तर्गत साहित्यकारो ने दुसरे के मुंह मीठा खाना छोड दिया जो कि निरीक्षण परीक्षण की कसोटी पर कसा न जा सके ।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रो. डी. पी. मुखर्जी ने भारतीय साहित्य के उन स्वरूपो को उजागर करने का प्रयास किया है जो एक भारतीय परिवेश में होते हुए भी विश्व परिवेश में खरा उतरता है। जो केवल तांत्रिक ही नही वास्तविक दुनिया से सम्बन्धित है और जो केवल भाग्य या भूतकाल को न मानकर भविष्य को, प्रगति को और नई आशाओं को प्रस्तुत करने में सफल हआ है। इस सफलता में ही आधुनिक भारतीय साहित्य की सार्थकता निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हरिकृष्ण रावत 1995 इनसाइकलोपिडिया आफ सोशियोलाजी, जयपुर।*
2. *डी. पी. मुखर्जी 1958 डाइवर्सिटिज, नयी दिल्ली ।*
3. *रवीन्द्र नाथ मुखर्जी 1987 सामाजिक विचारधारा, नयी दिल्ली।*
4. *डी पी मुखर्जी 1948 एन इकोनोमिक एण्ड सोशल सर्विस, खोज परिषद।*
5. *डी पी मुखर्जी 1953 मैंन एण्ड प्लान इन इण्डिया, इकनॉमिक विकली बम्बई।*
6. *डी पी मुखर्जी 1954 एन इकोनोमिक थ्योरी फार इंडिया, उद्घाटन भाषण, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़।*
7. *लक्ष्मी शंकर मिश्र 1984 प्रो डी पी मुखर्जी का आर्थिक समाज शास्त्र, सामाजिकी, वाराणसी।*